श्री नरहर्यष्टकं

श्री नरहर्यष्टकं

यद्धितं तव भक्तानामस्माकं नृहरे हरे |
तदाशु कार्यं कार्यज्ञ प्रळयार्कायुतप्रभ || 1 ||

रटत्सटोग्र भ्रुकुटीकठोरकुटिलेक्षण |
नृपंचास्य ज्वलज्ज्वालोज्ज्वलास्यारीन् हरे हर || 2 ||

उन्नद्धकर्णविन्यास विवृतानन भीषण |
गतदूषण मे शत्रून् हरे नरहरे हर || 3 ||

हरे शिखिशिखोद्भास्वदुरः क्रूरनखोत्कर |
अरीन् संहर दंष्ट्रोग्रस्फुरज्जिह्व नृसिंह मे || 4 ||

जठरस्थ जगज्जाल करकोट्युद्यतायुध |
कटिकल्पतटित्कल्पवसनारीन् हरे हर || 5 ||

रक्षोध्यक्षबृहद्वक्षोरूक्षकुक्षिविदारण |
नरहर्यक्ष मे शत्रुपक्षकक्षं हरे दह || 6 ||

विधिमारुतशर्वेंद्रपूर्वगीर्वाणपुंगवैः |
सदा नतांघ्रिद्वंद्वारीन् नरसिंह हरे हर || 7 ||

भयंकरोर्वलंकार वरहुंकारगर्जित |
हरे नरहरे शत्रून् मम संहर संहर || 8 ||

वादिराजयतिप्रोक्तं नरहर्यष्टकं नवं |
पठन्नृसिंहकृपया रिपून् संहरति क्षणात् || 9 ||

इति श्रीमद्वादिराज पूज्यचरण विरचितं श्री नरहर्यष्टकं |